

अभियान : टाइटन

सतीश बलराम अग्निहोत्री

“प्रोफेसर अभियान, तुमने भी मुझ पर आक्रमण करने की मूर्खता की है।” जीव का स्वर सपाट था। “पता नहीं, तुम लोगों को विद्युत और चुम्बकीय क्षेत्रों पर इतना भरोसा क्यों है! मेरा सारा बदन इनके विरुद्ध सुरक्षित है। तुम्हें अगर देखना ही है तो मैं एक और तरंग का कमाल दिखाता हूँ - वह है ध्वनि-तरंगों का कमाल! उसके बाद शायद तुम लोग मुझे फिर परेशान करने की कोशिश नहीं करोगे। और तुम, प्रोफेसर अभियान, मेरे साथ चलकर मुझे संकेत-उपकरण तैयार करने की सारी विधि विस्तार से बताओगे। चलो।”

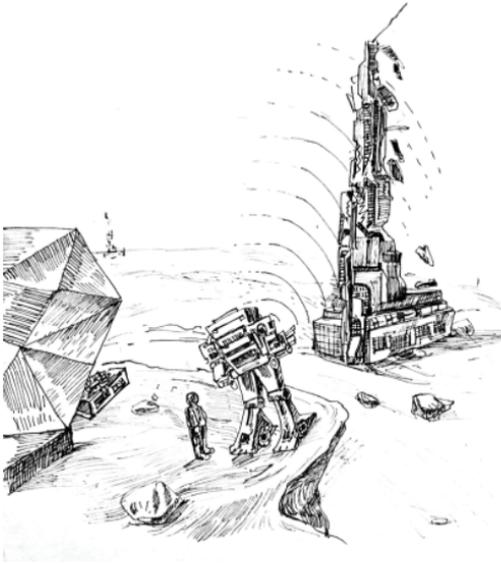
कोई चारा नहीं था। जीव सबको मौसममापी टॉवर के पास ले गया। इस टॉवर पर टाइटन का अन्तरिक्ष रडार भी रखा रहता था। “अब मैं तुम लोगों को दिखाता हूँ, किस तरह ध्वनि-तरंगें एक इमारत को तहस-नहस कर सकती हैं। मैं अब ध्वनि-तरंगें पैदा करूँगा जिनकी लम्बाई क्रमशः छोटी होती जाएगी और लय बढ़ती जाएगी। एक स्थिति ऐसी आएगी जब पूरी इमारत उसी लय के साथ काँपने लगेगी और फिर धराशायी हो जाएगी।”

इस प्रभाव से सभी वाकिफ थे। यही कारण था कि दशकों पहले पृथ्वी पर सेनाओं को पुलों पर मार्च करना मना था। उनके मार्च करने की लय से पुल भी उसी लय से काँपकर टूट सकता था। लेकिन अस्त्र के रूप में इस प्रभाव का उपयोग किसी ने नहीं सोचा था।

विस्फारित आँखों से सब देख रहे थे। टॉवर का निचला भाग वाकई भरभराने लगा था। जीव ने लहरों की तीव्रता बढ़ाई, टॉवर का ऊपरी हिस्सा अब एक ओर झुकने लगा। देखते-देखते वह चरमरा कर गिर पड़ा।

जीव ने अपने दर्शकों की ओर सन्तोष से देखा और फिर सपाट आवाज़ में बोला, “अब, प्रोफेसर अभियान, तुम मेरा काम दो घण्टों के भीतर करोगे, वरना मैं ध्वनि लहरों का उपयोग तुम पर करूँगा।”

सबके चेहरे गम्भीर हो गए। पासा उलटा पड़ा था। लेकिन अभियान ने धीरज नहीं खोया, उनका दिमाग तेज़ी-से काम कर रहा था। कुछ भी करके संकेत-उपकरण के निर्माण को यथासम्भव आगे टालना होगा। वे जीव के साथ यान की ओर चल पड़े।



दरअसल, उनके दिमाग में एक तरकीब आ चुकी थी।

“तुम्हारे उपकरण के लिए सिलिकॉन क्रिस्टल की आवश्यकता है। लेकिन जितना शक्तिशाली संकेत तुम भेजना चाहते हो, उसके लिए काफी बड़े रवे की - 5 सेमी x 5 सेमी x 5 सेमी के आकार की आवश्यकता पड़ेगी।” उन्हें पता था कि इस आकार का रवा बनाना मामूली काम नहीं है। दस-पन्द्रह दिन उसमें लग जाएँगे, तब तक कुछ और उपाय सोचा जा सकता है।

जीव का सन्देह कायम था। उसने अभियान से उपकरण के सर्किट के बारे में विस्तार से जानकारी लेकर खुद को आश्वस्त किया। अभियान

उसे प्रयोगशाला में ले गए और उसके सामने रवा बनाने की पूरी तैयारियाँ कीं और प्रक्रिया चालू की। यह अलग बात थी कि उन्होंने जान-बूझकर एक पुरानी और धीमी प्रक्रिया चुनी थी।

आज की घटना की खबर सारी कॉलोनी में फैल चुकी थी। अभियान के वापस आने पर चिन्तित वैज्ञानिकों ने उनसे सारा विवरण पूछा और अभियान ने उन्हें विस्तृत जानकारी दी।

रात को अभियान अपने बिस्तर पर लेटे हुए थे कि सन्दीप आया। उसकी आँखें उत्सुकता से चमक रही थीं।

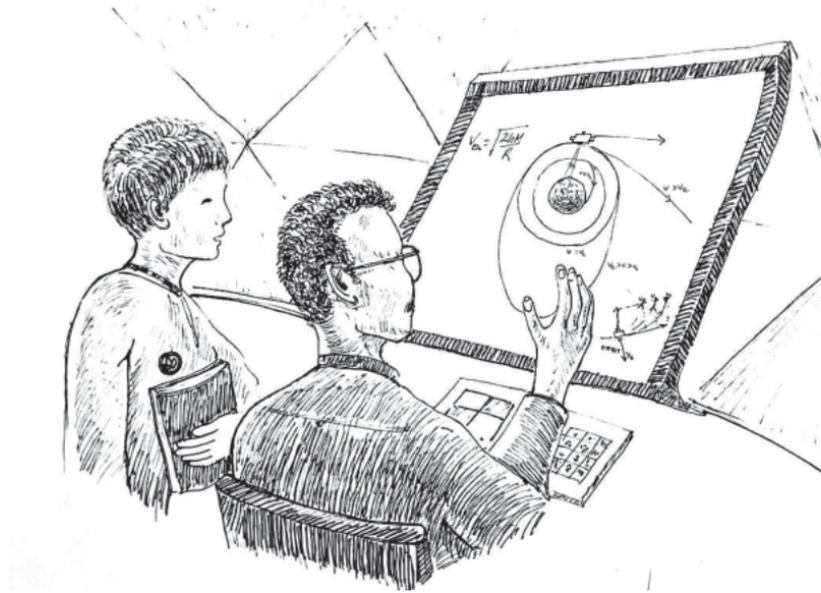
“अंकल-अंकल, मुझे एक बात पूछनी थी।”

“कौन-सी? वह सैटेलाइट वाली?”

“नहीं-नहीं अंकल, लेकिन वैसी ही।”

“पूछो।” अभियान ने कहा।

“अंकल, आज हमारी टीचिंग मशीन हमें सैटेलाइट के बारे में बता रही थी। उसने बताया कि सैटेलाइट को टाइटन के चारों ओर चक्कर लगाने के लिए एक कक्षा में छोड़ा जाता है, लेकिन उसके लिए यह ज़रूरी है कि उसे टाइटन की सतह से कम-से-कम एक खास वेग से छोड़ा जाए, है न?”



“हाँ बेटे, यह वेग, मुक्ति-वेग यानी एस्केप वेलोसिटी कहलाता है। तुम्हें मालूम है कि ग्रह के गुरुत्वाकर्षण के कारण जब तुम किसी वस्तु को ऊपर फेंकते हो, वह नीचे की ओर गिर पड़ती है। तुम उसे जितने वेग से फेंकोगे, वह उतनी ऊपर जाएगी। एक स्थिति ऐसी आएगी जब वह वस्तु टाइटन के गुरुत्वाकर्षण के चंगुल से मुक्ति पा जाएगी और ऊँचाई पर एक कक्षा-विशेष में टाइटन का चक्कर लगाती रहेगी। उसे ही उपग्रह कहते हैं।” अभियान के अन्दर का शिक्षक जाग पड़ा था। “तुम्हारा टाइटन खुद शनि का उपग्रह है। हमारा चाँद भी पृथ्वी का उपग्रह ही समझो।”

“यानी अंकल, एक बार अगर कोई वस्तु उस कक्षा में पहुँच जाए तो वह

वहीं रह जाएगी?”

“हाँ, आम तौर पर।”

“वापस नहीं आएगी?”

“ना, ना बेटे, वापस नहीं आएगी। वापस कैसे आएगी?”

“अगर वह चाहे भी तो?”

“आँय, चाहे का सवाल ही कहाँ उठता है? बेजान वस्तु...”

“बेजान नहीं अंकल, वह जीव...”

“वह जीव? लेकिन वह वहाँ क्या करेगा?”

“ओपफो अंकल, अगर हम उसे मुक्ति-वेग से भी अधिक वेग से फेंक दें तो वह हमेशा के लिए वहाँ चक्कर लगाता रहेगा, पर कुछ कर नहीं पाएगा।”

“ओह!” अब अभियान के दिमाग में प्रकाश कौन्धा और वे हँसने लगे। हँसते-हँसते उनकी आँखों में पानी आ गया। “पर दीपू बेटे, बिल्ली के गले में घण्टी बाँधोगे कैसे? जब तक हम उसे पकड़ेंगे और फेंकेंगे, वह हमारी चटनी बना चुका होगा।”

दीपू के मुरझाए हुए चेहरे को देखकर उन्हें बुरा लगा। उन्हें इस तरह हँसना नहीं चाहिए था। अपनी समझ के मुताबिक ही सही, पर उसने एक सुझाव तो दिया था। सच पूछा जाए तो सुझाव इतना बेतुका भी नहीं था। सिर्फ इस जीव को पकड़ पाना...

दीपू के जाने के बाद काफी देर तक अभियान बिस्तर पर बैठे रहे। उन्हें नींद नहीं आ रही थी। दीपू का सुझाव उनके मन में कहीं घर कर गया था। अगर किसी तरह जीव को फेंका जा सके... वे सोचने लगे। कई हास्यास्पद विचार उनके मन में आए, जिनमें अन्तिम था, ‘क्या ही अच्छा हो, वह कमबख्त खुद ही कक्षा में जाने को तैयार हो जाए।’ उन्हें अपने बचपने पर हँसी आ गई। “खुद मान जाए!” लेकिन अचानक उनकी हँसी को ब्रेक लगे - “क्यों नहीं?”

फिर तो विचारों का सिलसिला जिस रफ्तार से उनके दिमाग में चला, उसी रफ्तार से वे अपने स्लीपिंग सूट में ही उठकर डॉ. राव के कमरे की ओर बाकायदा

आर्किमिडीज़ की परम्परा में ‘यूरेका-यूरेका’ कहते हुए दौड़ लिए।

जीव से बातों के दौरान अभियान को पता चला था कि उसके ग्रह पर गुरुत्वाकर्षण का बल टाइटन के मुकाबले कोई 500 गुना अधिक था। अतः वहाँ रॉकेटों को जिस मुक्ति-वेग से छोड़ा जाता था, वह टाइटन ग्रह से छोड़े गए रॉकेटों के मुक्ति-वेग से बहुत ही ज़्यादा था। अगर वे उस जीव से ऐसे वेग से छलाँग लगवा सकें जो टाइटन के मुक्ति-वेग से अधिक हो तो वह जीव हमेशा के लिए टाइटन की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बाहर चला जाएगा और उपग्रह बनकर टाइटन के चक्कर काटता रहेगा।

“लेकिन वह छलाँग लगाएगा क्यों?” नींद में खलल पड़ने से झल्लाए हुए डॉ. राव ने पूछा।

“मैंने उसकी तरकीब भी सोच ली है।” अभियान का उत्तर था, “जीव के दिमाग में उसके ग्रह की श्रेष्ठता का दावा कूट-कूट कर भरा हुआ है। हम उसका उपयोग कर सकते हैं। मैं बातों-बातों में उससे पृथ्वी की सभ्यता के विकास और लम्बी व ऊँची कूद का ज़िक्र करूँगा। मुझे विश्वास है कि वह अपने ग्रह के आँकड़े बढ़ा-चढ़ा कर बताएगा।”

“और आप उसे छलाँग लगाकर दिखाने को कहेंगे।” गीता की समझ में बात आ गई थी, “अभियान,

हालाँकि आपका सुझाव अच्छा है, उसमें कई अगर-मगर लगे हुए हैं, फिर भी कोशिश तो की ही जाए। पर इससे पहले कि आप उसे कूदने को कहें, एक वाक्य जोड़ दीजिएगा, 'मान लो कि तुम अपने ग्रह पर हो।' एक बार जब वह मानकर चलेगा कि वह अपने ग्रह पर है तो टाइटन के गुरुत्वाकर्षण के बारे में उसे जो भी जानकारी है, वह नज़रअन्दाज़ हो जाएगी।"

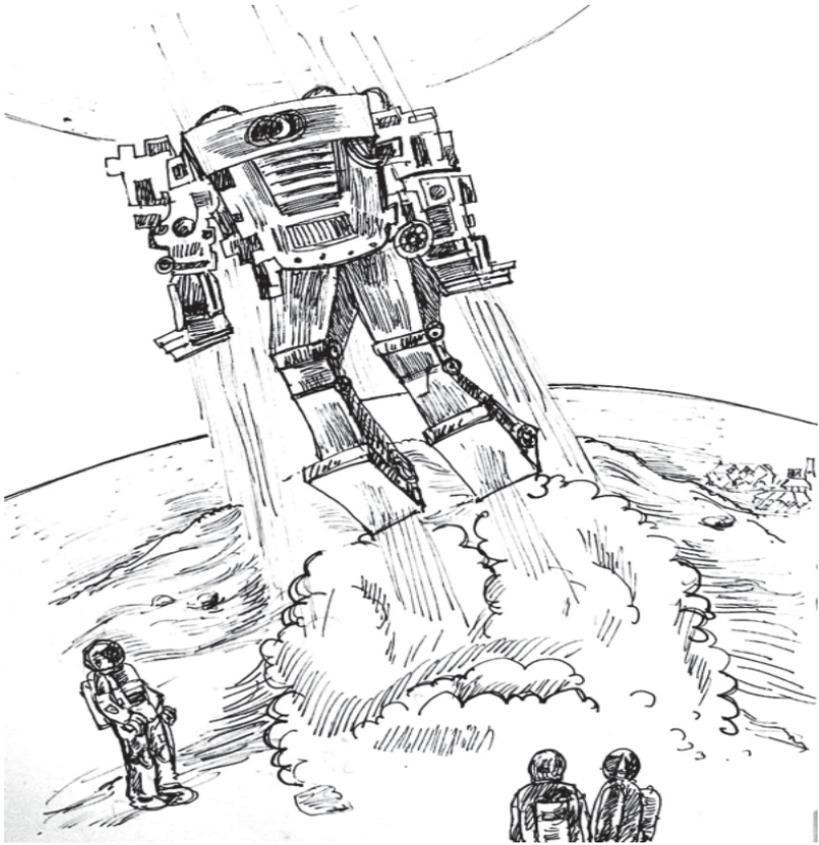
"मान लो कि तुम अपने ग्रह पर हो।" अभियान ने धड़कते हुए दिल से कहा। वे जीव के साथ टाइटन की सबसे ऊँची पहाड़ी 'गिरि पीक' पर खड़े थे। पहाड़ी पर जाने का सुझाव सवेरे हुई मीटिंग में चेस्लॉव ने दिया था। उनका कहना था, "अगर उसे कूदना ही है तो जितनी ऊँचाई से कूदे, अच्छा है। उतनी ही ऊँची कक्षा में घूमेगा और हमसे उतना ही दूर रहेगा।" उसके मत का औरों ने भी समर्थन किया।

प्रोफेसर के सहयोगपूर्ण रुख को देखकर जीव भी आश्चर्य था कि कल का सबक प्रभावी रहा है। अभियान से उसे रवा बनाने की प्रक्रिया की सन्तोषजनक प्रगति का समाचार मिला और संकेत-उपकरण के बारे में काफी विस्तार से बातचीत हुई। "कुछ ही दिनों की तो बात है," उन्होंने कहा, "फिर तुम्हारा संकेत-उपकरण तैयार हो जाएगा, तब तक

क्यों न दोस्ती के वातावरण में रहा जाए?" वे खूब सारी बातें करते रहे थे। अभियान उसे टाइटन का सारा भूगोल समझाने हेतु पहाड़ी पर ले गए। चढ़ते समय अभियान ने पृथ्वी की सभ्यता के बारे में काफी बातें कहीं - खेल-कूद की भी, और फिर वे एथलेटिक्स पर आ गए। जीव की समझ में नहीं आ रहा था कि इन चीज़ों को धरती पर इतना महत्व क्यों दिया जाता है। अब कूदने को ही लो। ऊँचाई मालूम है। वातावरण का गतिरोध मालूम है। इसके आधार पर आरम्भिक गति का हिसाब लगाओ। पैरों को जुम्बिश दो, और कूद जाओ। इसलिए जब अभियान ने ऊँची-लम्बी कूद के रिकॉर्डों की बात की, तो उसे हँसी आ गई। लेकिन ग्रह की सभ्यता के श्रेष्ठत्व की बात थी। उसने कहा, "हमारे ग्रह पर तो लोग इससे दस गुना ऊँची छलाँग लगा लेते हैं।" आश्चर्य से अभियान बोले थे, "कूदकर दिखाओ, तो जानें।"

"कूदने को तो हजार गुना कूद जाऊँ, पर तुम पृथ्वी वालों के मान जाने के लिए कि हमारे ग्रह की सभ्यता उनसे श्रेष्ठ है, सौ गुना ही काफी है।" जीव ने कहा। वे लोग पहाड़ी की चोटी पर आ गए थे।

"मान लो, तुम अपने ग्रह पर हो..." अभियान का दिल तेज़ी-से धड़क रहा था, "यहाँ से तुम 2000 मीटर ऊँची और 3000 मीटर लम्बी छलाँग लगाओ, तो जानें।"



जीव का दिमाग तुरन्त प्रस्थान-स्थिति में पहुँच गया। हिसाब लगाया। इतनी ऊँची छलाँग के लिए इतनी प्रारम्भिक गति, इसके लिए पैरों को इतने बल से इस कोण पर जुम्बिश देनी होगी। उसकी आँखों से वे तमाम दूरबीनें छिपी हुई थीं जिनसे सारे वैज्ञानिक, साँस रोके हुए, अपेक्षित घटना की प्रतीक्षा कर रहे थे।

“मैं दस की उलटी गिनती गिनता हूँ।” अभियान ने कहा, “...सात... छह... पाँच... चार... तीन... दो... एक... जम्पा!”

दूसरे ही क्षण तीर की तेज़ी-से जीव ऊपर की ओर उठ चुका था। गति देखकर ही अभियान जान गए कि जीव ने अपने ग्रह के हिसाब से छलाँग लगाई है। खुशी से उनकी आँखें नम हो आईं।



दीपू को छुट्टियों में धरती की सैर का आमंत्रण देकर उन्होंने सबसे विदा ली। चलने से पहले वे प्रोफेसर गॉस को अपने आने का सन्देश दे चुके थे। उड़ान भरने के कुछ मिनट बाद उन्होंने यान का नियंत्रण स्वचालित उड़ान-व्यवस्था के हाथों में सौंपकर आराम-से आँखें बन्द कर लीं।

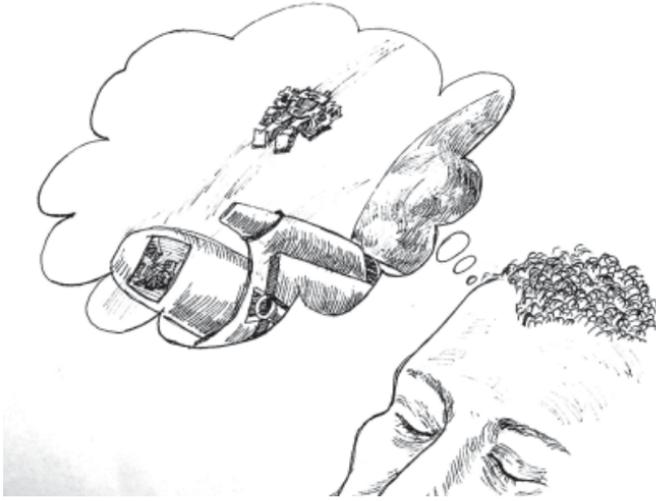
दीपू खुशी से फूला नहीं समा रहा था। वह रातोंरात कॉलोनी का हीरो बन गया था। अभियान ने भरी कॉन्फ्रेंस में उसको कन्धे पर बिठा लिया था। उन्होंने दीपू से यह भी वादा किया था कि वे इस बार की छठी-सातवीं कक्षा को फिज़िक्स पढ़ाना जारी रखेंगे। वापस जाते ही डमरे साहब को स्वीकृति दे देंगे और हर लेसन दीपू को भेजेंगे। दीपू का आग्रह - 'अंकल, आप पढ़ाइए न' उनसे नकारते नहीं बना। न जाने धरती पर भी ऐसा ही कोई सन्दीप कहीं किसी समस्या को हल कर पाए। सब ने सर्वसम्मति से टाइटन के उस नए उपग्रह का नाम सन्दीप रखा।

अभियान के कारनामे की खबर पृथ्वी पर पहुँच चुकी थी। वहाँ भी उनके स्वागत की भव्य तैयारियाँ थीं।

अलार्म की तेज़ आवाज़ से उनके विचारों को एक झटका लगा। नियंत्रण-कक्ष के ऊपर लाल बत्ती जल रही थी। स्क्रीन पर समस्या लिखी हुई थी - 'तीव्र चुम्बकीय क्षेत्र... पुरानी समस्या... समाधान नहीं... खतरा!'

अभियान का दिल डूबने लगा। 'तीव्र चुम्बकीय क्षेत्र?' कहीं वे जीव के चक्कर में तो नहीं पड़ गए? उन्होंने अन्दर जाने की ज़हमत नहीं उठाई, बल्कि टीवी कैमरा ऑन करके अन्तरिक्ष में नज़र दौड़ाने लगे।

टाइटन के चक्कर काटता हुआ जीव साफ नज़र आ रहा था। अभियान की आशंका सही निकली। यान उसकी दिशा में ही खिंच रहा था। असहाय यान का जीव के हाथों में



पड़ने का अर्थ था, सारे किए-कराए पर पानी फिरना। अभियान ने मन-ही-मन निर्णय लिया और पृथ्वी को अन्तिम सन्देश भेज दिया - “मैं यान को जीव से टकराकर तोड़ रहा हूँ, और खुद भी शहीद हो रहा हूँ। अलविदा!”

जीव के लिए यह आखिरी अवसर था। रॉकेट हथियाना उसके लिए ज़रूरी था। उसके अन्दर की बैटरियाँ और अधिक दिनों तक साथ देने वाली नहीं थीं, उसने इतनी सारी ताकत जो खर्च कर डाली थी। यह एकमात्र मौका था पृथ्वी पर पहुँचने का। यान उसकी ओर धीमी रफ्तार से खिंच रहा था। शायद अभियान पूरी शक्ति से उसे विरुद्ध दिशा में ले जाने के प्रयास में लगे थे।

यान अब कोई दो सौ मीटर की

दूरी पर होगा। अभियान ने अचानक दिशा बदली और पूरी गति से यान को जीव की दिशा में बढ़ाया। एक्सेलरेटर अपनी उच्चतम स्थिति में था... उन्होंने उलटी गिनती शुरू की - चार... तीन... दो... एक...

धड़ाम की आवाज़ के साथ उनको होश आया। अरे! वे तो अपने कमरे में थे। अलार्म घड़ी साढ़े चार बजा रही थी। कॉफी का पानी उबल रहा था और स्वचालित यंत्र पानी का तापक्रम बता रहा था। टाइटन... जीव... यान... टक्कर... दीपू... अभियान को भी हँसी आ गई। सपने भी क्या अजीब होते हैं। सारी रामायण उस डमरे को की गई ‘ना’ को ‘हाँ’ में बदलने के लिए तो नहीं थी? सपने का ही सही पर अपना वादा उन्हें याद था। उन्होंने डमरे का नम्बर मिलाया।



स्क्रीन पर अभियान का चेहरा देखकर डमरे साहब को आश्चर्य हुआ, “इतने सवरे प्रोफेसर?”

“हाँ,” अभियान ने जवाब दिया, “मैं इस साल भी आऊँगा पढ़ाने। तुम आज प्रयोगशाला में आ जाओ। बाकी बातें वहीं करेंगे। वैसे डॉ. राव के लड़के को धन्यवाद दो। उसी की सिफारिश पर तुम्हारा काम हुआ है।”

“पर... सन्दीप... वह तो टाइम पर...” डमरे साहब को वैसा ही अचम्बित छोड़कर अभियान ने फोन रख दिया। वे काफी प्रफुल्लित महसूस कर रहे थे।

खैर, कारण चाहे खाक समझ में आया हो, प्रफुल्लित तो डमरे साहब भी महसूस कर रहे थे।

सतीश बलराम अग्निहोत्री: भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व अधिकारी और अब आई.आई.टी. मुंबई में प्राध्यापक। जन्म रत्नागिरी ज़िले के देवरुख गाँव में हुआ। बचपन बिहार के दरभंगा शहर में गुज़रा जहाँ स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की। इसके बाद आई.आई.टी. मुंबई से फिज़िक्स और फिर पर्यावरण विज्ञान में एम.टेक. किया। 1980 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में ओडिशा राज्य एवं केन्द्र सरकार में कई विशिष्ट पदों पर 35 साल सेवारत रहे। हिन्दी में विज्ञान कहानियाँ और लेख लिखने की शुरुआत तब की जानी-मानी पत्रिका ‘धर्मयुग’ से हुई। व्यंग्य रचनाएँ भी लिखते रहते हैं। सम्पर्क - sathagnihotri1955.in

सभी चित्र: हरमन: चित्रकार हैं। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से फाइन आर्ट्स (चित्रकारी) में स्नातक और अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से विजुअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर। भटिंडा, पंजाब में रहती हैं।

यह कहानी *धर्मयुग* पत्रिका में सन् 1978 में प्रकाशित की गई थी।